International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 09-11-2020; Accepted: 24-11-2020; Published: 09-12-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 137-140

हिंदी बाल साहित्य : एक अवलोकन

अश्विनी के

शोधार्थी, हिंदी अध्ययन विभाग, मानसगंगोत्री मैसूर, कर्नाटक, भारत

सारांश

पुराने समय में कहानी एक व्यक्ति सुनता था और उसे विभिन्न वर्गों के श्रोतागण विभिन्न रूपों में ग्रहण करते थे। बड़े लोग इन्हें जीवन के अनुभव के रंगो में रंगकर सुनते थे। युवा श्रोतावर्ग इन अनुभवों को कार्यरूप देता था। बच्चे इनमें मनोरंजन के साथ-साथ दुनिया की विशालता को भी अनुभव करते थे। प्रत्येक कथा के प्रति बच्चों की एक विशिष्ट दृष्टि हुआ करती थी और उसे वे सबसे पहले अपनी रूचि की कसौटी पर देखा करते थे और जो कहानी खरी उतरती थी, वही सही अर्थों में बाल-मन पर अमिट छाप छोड़ती थी। साहित्य के प्रति बच्चों की इसी विशिष्ट रूचि ने आगे चलकर स्वतंत्र बाल-साहित्य को जन्म दिया

मूलशब्द: बाल मनोविज्ञान, मनोरंजन, विशालता, प्रगति, संभावनाएँ

प्रस्तावना

भारत में प्राचीन काल से ही पंचतंत्र, हितोपदेश तथा थासरितसागर आदि के रूप में बाल साहित्य परंपरा रही है। इसके अलावा लोक कथाओं तथा दंत कथाओं में भी बाल साहित्य मिलता है। जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक माध्यम से चला आ रहा है। इस क्रम में बीरबल की कथाएँ, तेनालीराम की कथाएँ आदि के किस्से कहानियाँ आती हैं जो बच्चों की जुबान पर चढ़ी हैं और आज भी कही सुनी जाती हैं। इस सबका सीधा लाभ हिंदी साहित्य को मिला।

सन् 1882 में स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा बाल दर्पण नामक पत्रिका के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ही आधुनिक हिंदी साहित्य के निर्माता माने जाते हैं। हिंदी बाल साहित्य में मौलिक लेखन का प्रारंभ 20 वीं शताब्दी से माना जा सकता है। यह साहित्य आमतौर पर विद्यार्थी, शिशु तथा बालसखा जैसी पत्रिकाओं के प्रकाशन से प्रारंभ हुआ। इसके बाद वानर, कुमार तथा मनमोहन आदि बाल पत्रिकाएँ भी निकलीं। इन बाल पत्रिकाओं ने न सिर्फ समर्थ बाल साहित्यकार पैदा किए किंतु बाल साहित्य की समृद्धि के लिए नींव भी रखी। इन बाल पत्रिकाओं में उस समय के कई प्रतिष्ठित साहित्यकारों जैसे मैथिलीशरण गुप्त, कुमताप्रसाद गुरू, रामनरेश त्रिपाठी, बाबू गुलाबराय, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध तथा सुभद्राकुमारी चौहान आदि ने भी रचनाएँ लिखीं। वह समय सामाजिक जनजागरण तथा स्वतंत्रता आंदोलन का समय था। अतः उन दिनों के बाल साहित्य में स्वाभाविक रूप से आदर्शपरक, नीतिपरक तथा देश प्रेम की भावनाओं से ओतप्रोत रचनाएँ लिखीं गई।

हिंदी बाल साहित्य के विकास ने काफी गति पकड़ ली। उस समय रचनाकारों की एक ऐसी पीढ़ी सामने आई जिसने समृद्ध बाल साहितय की आवश्यकता और उपयोगिता को समझा और उसके विकास के लिए कटिबद्ध हो गए जिनमें महत्वपूर्ण हैं श्रिधर पाठक, ठाकुर श्रीनाथ सिंह, लल्ली प्रसाद पांडे, द्वारका प्रसाद माहेश्वरी, निरंकार देव सेवक, विष्णुकांत पांडे, सोहनलाल द्विवेदी

आदि जिन्होंने अपना सारा ध्यान और प्रतिभा बाल साहित्य के विकास के लिए ही समर्पित कर दी।

इस अवधि में हिंदी बाल साहित्य को एक निश्चित एंव स्वतंत्र स्वरूप प्राप्त हुआ। फिर कई समर्पित साहित्यकार इस क्षेत्र में आए और विकास होता चला गया। शकुंतला सिरोठिया, श्री प्रसाद, चंद्रपाल सिंह यादव, मयंक, स्वर्ग सोहदर, शंभुप्रसाद श्रीवास्तव, हरिकृष्ण देवसरे, नारायण लाल परमार, शंकर सुल्तानपुरी, दामोदर अग्रवाल, सत्येंद्र वर्मा, राष्टबंधु, जयप्रकाश भारती, चक्रधर नलिन, विनोदचंद्र पांडेय और शोभनाथ लाल ऐसे ही रचनाकार हैं जिन्होंने हिंदी बाल साहित्य को न सिर्फ समृद्ध किया बल्कि उसे बहुआयामी विस्तार भी दिया। उस अवधि में हिंदी साहित्य के कुछ महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों जैसे रामकुमार वर्मा, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, कमलेश्वर तथा प्रयाग शुक्ल आदि ने भी हिंदी बाल साहित्य की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान किया। इन साहित्यकारों ने बाल साहित्य को एक चुनौती के रूप में लिया। और वे कटिबद्ध होकर बाल साहित्य को एक सुनिश्चित दृष्टी और उद्धेश्य देने के लिए तैयार हो गए। यही कारण हैं छठे दशक के बाद हिंदी बाल साहित्य ने उल्लेखनीय प्रगति की। फिर साठ के बाद प्रकाश मनु शेरजंग गर्ग, दिविक रमेश, रतनलाल शर्मा, रोहिताश्क अस्थाना, उषा यादव, सूर्यकुमार पांडे, सुरेंद्र विक्रम, बानो सरताज, सूर्यभानु गुप्त, भगवती प्रसाद द्विवेदी, चित्रेश, जगदीश चंद्र शर्मा, राजनारायण चौधरी, संजीव जायसवाल, कमलेश भट्ट, घमंडीलाल अग्रवाल, रमेश तैलंग, शंभुनाथ तिवारी, परशुराम शुक्ल और सरोजिनी कुलश्रेष्ठ आदि रचनाकारों ने हिंदी बाल साहित्य को समृद्ध किया।

बाल साहित्यकारों ने कविता, कहानी, उपन्यास और एंकाकी आदि विधाओं तक बाल साहित्य को सीमित नहीं रखा बल्की अन्य विधाओं में भी नए प्रयोग केए। उसके बाद की पीढ़ी के रूप में शकुंतला कालरा, जाकिर अली रजनीश, उषा विमलांशु, श्याम सुंदर कोमल रमाशंकर, नागेश पांडेय संजय, अजय जनमेजय, रवींद्र कुमार रवि, देशबंधु शाहजाहाँपुरी, साबिर हुसैन, सुरेंद्र श्रीवास्तव, वीणा श्रीवास्तव, शिवचरण चौहान, राजकुमार जैन राजन, मोहम्मद फहीम और अरशद खान आदि रचनाकारों की एक सशक्त टीम हिंदी बाल साहित्य की बेहतर की दिशा में सक्रिय है। इन सभी रचनाकारों के अथक प्रयास ने आज हिंदी बाल साहित्य को उस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है कि वह अन्य किसी भी भाषा के बाल साहित्य से होड़ लेने में पूरी तरह समर्थ है।

पिछले लगभग तीन दशक का समय विज्ञान, तकनीक, संचार और सूचना के क्षेत्र में क्रांति का समय रहा है। विज्ञान और टेकनॉलाजी न सिर्फ हमारे सामाजिक और पारिवारिक बल्कि

वैयक्तिक जीवन में भी काफ़ी गहरा हस्तक्षेप किया है। आज का बच्चा होश संभालते ही टी.वी., कंप्यूटर, एसी, फ्रिज़ और मोबाइल जैसे उपकरणों से साक्षात्कार करता है। अतः उसे परी, अप्सरा, भूत, प्रेत और दैवीय चमत्कार सरीखी काल्पनिक बातों से नहीं बहलाया जा सकता। हिंदी के बाल साहित्यकार इस तथ्य को बखूबी समझते हैं और यही कारण है कि हिंदी में आज वैज्ञानिक दृष्टी संपन्न साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। शुकदेव प्रसाद, जयंत विष्णु नार्लीकर, विजयकुमार उपाध्याय, गुणाकर मुले तथा लल्लन कुमार प्रसाद जैसे रचनाकारों ने विविध विधाओं में विपुल मात्रा में मौलिक रोचक तथा उपयोगी विज्ञान बाल साहित्य की रचना की है। इनके अतिरिक्त संजीव जायसवाल, संजय अरविंद मिश्र तथा जाकिर अली रजनीश ने भी वैज्ञानिक विषयों को लेकर कविताओं, कहानियों, उपन्यासों तथा वैज्ञानिक लेखों आदि की रचना की है।

इंटरनेट पर बाल साहित्य की पहुँच तेजी से बढ़ रही है। गूगल द्वारा फ्री स्पेस उपलब्ध कराने के बाद से इस दिशा में एक क्रांति सी हुई है। 'बालमन' सबसे पहला ब्लॉग है, जिसने श्रेष्ठ बाल साहित्य को इंटरनेट पर जगह दी। मजदूर बच्चों के द्वारा चलाए जा रहे 'बाल सजग', 'नानी की चिट्ठियाँ' एवं 'फुलबगिया' ब्लॉग महत्वपूर्ण हैं। जरूरी हैं कि इन ब्लॉग पत्रिकाओं तक बच्चों को पहुँचाया जाए और बच्चों को निरापद ढंग से इंटरनेट पर काम करने के

लायक बनाना आज की आवश्यकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी का बाल साहित्य अपना विकास करता जा रहा है और उसकी अनेक संभावनाएँ भी बन रही हैं। भारत में प्राचीन काल से ही पंचतंत्र, हितोपदेश तथा कथासरितसागर आदि के रूप में बाल साहित्य परंपरा रही है। इसके अलावा लोक कथाओं तथा दंत कथाओं में भी बाल साहित्य मिलता है। जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक माध्यम से चला आ रहा है। इस क्रम में बीरबल की कथाएँ, तेनालीराम की कथाएँ आदि के किस्से कहानियाँ आती हैं जो बच्चों की जुबान पर चढ़ी हैं और आज भी कही सुनी जाती हैं। इस सबका सीधा लाभ हिंदी साहित्य को मिला।

सन् 1882 में स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा बाल दर्पण नामक पत्रिका के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ही आधुनिक हिंदी साहित्य के निर्माता माने जाते हैं। हिंदी बाल साहित्य में मौलिक लेखन का प्रारंभ 20 वीं शताब्दी से माना जा सकता है। यह साहित्य आमतौर पर विद्यार्थी, शिशु तथा बालसखा जैसी पत्रिकाओं के प्रकाशन से प्रारंभ हुआ। इसके बाद वानर, कुमार तथा मनमोहन आदि बाल पत्रिकाएँ भी निकलीं। इन बाल पत्रिकाओं ने न सिर्फ समर्थ बाल साहित्यकार पैदा किए किंतु बाल साहित्य की समृद्धि के लिए नींव भी रखी। इन बाल पत्रिकाओं में उस समय के कई प्रतिष्ठित साहित्यकारों जैसे मैथिलीशरण गुप्त, कुमताप्रसाद गुरू, रामनरेश त्रिपाठी, बाबू गुलाबराय, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध तथा सुभद्राकुमारी चौहान आदि ने भी रचनाएँ लिखीं। वह समय सामाजिक जनजागरण तथा स्वतंत्रता आंदोलन का समय था। अतः उन दिनों के बाल साहित्य में स्वाभाविक रूप से आदर्शपरक, नीतिपरक तथा देश प्रेम की भावनाओं से ओतप्रोत रचनाएँ लिखीं गई।

हिंदी बाल साहित्य के विकास ने काफी गति पकड़ ली। उस समय रचनाकारों की एक ऐसी पीढ़ी सामने आई जिसने समृद्ध बाल साहितय की आवश्यकता और उपयोगिता को समझा और उसके विकास के लिए कटिबद्ध हो गए जिनमें महत्वपूर्ण हैं श्रिधर पाठक, ठाकुर श्रीनाथ सिंह, लल्ली प्रसाद पांडे, द्वारका प्रसाद माहेश्वरी, निरंकार देव सेवक, विष्णुकांत पांडे, सोहनलाल द्विवेदी आदि जिन्होंने अपना सारा ध्यान और प्रतिभा बाल साहित्य के विकास के लिए ही समर्पित कर दी।

इस अवधि में हिंदी बाल साहित्य को एक निश्चित एंव स्वतंत्र स्वरूप प्राप्त हुआ। फिर कई समर्पित साहित्यकार इस क्षेत्र में आए और विकास होता चला गया। शकुंतला सिरोठिया, श्री प्रसाद, चंद्रपाल सिंह यादव, मयंक, स्वर्ग सोहदर, शंभुप्रसाद श्रीवास्तव, हरिकृष्ण देवसरे, नारायण लाल परमार, शंकर सुल्तानपुरी, दामोदर अग्रवाल, सत्येंद्र वर्मा, राष्टबंधु, जयप्रकाश भारती, चक्रधर नलिन, विनोदचंद्र पांडेय और शोभनाथ लाल ऐसे ही रचनाकार हैं जिन्होंने हिंदी बाल साहित्य को न सिर्फ समृद्ध किया बल्कि उसे बहुआयामी विस्तार भी दिया। उस अवधि में हिंदी साहित्य के कुछ महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों जैसे रामकुमार वर्मा, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, कमलेश्वर तथा प्रयाग शुक्ल आदि ने भी हिंदी बाल साहित्य की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान किया। इन साहित्यकारों ने बाल साहित्य को एक चुनौती के रूप में लिया। और वे कटिबद्ध होकर बाल साहित्य को एक सुनिश्चित दृष्टी और उद्धेश्य देने के लिए तैयार हो गए। यही कारण हैं छठे दशक के बाद हिंदी बाल साहित्य ने उल्लेखनीय प्रगति की। फिर साठ के बाद प्रकाश मनु शेरजंग गर्ग, दिविक रमेश, रतनलाल शर्मा, रोहिताश्क अस्थाना, उषा यादव, सूर्यकुमार पांडे, सुरेंद्र विक्रम, बानो सरताज, सूर्यभानु गुप्त, भगवती प्रसाद द्विवेदी, चित्रेश, जगदीश चंद्र शर्मा, राजनारायण चौधरी, संजीव जायसवाल, कमलेश भट्ट, घमंडीलाल अग्रवाल, रमेश तैलंग, शंभुनाथ तिवारी, परशुराम शुक्ल और सरोजिनी कुलश्रेष्ठ आदि रचनाकारों ने हिंदी बाल साहित्य को समृद्ध किया।

बाल साहित्यकारों ने कविता, कहानी, उपन्यास और एंकाकी आदि विधाओं तक बाल साहित्य को सीमित नहीं रखा बल्की अन्य विधाओं में भी नए प्रयोग केए। उसके बाद की पीढ़ी के रूप में शकुंतला कालरा, जाकिर अली रजनीश, उषा विमलांशु, श्याम सुंदर कोमल रमाशंकर,

नागेश पांडेय संजय, अजय जनमेजय, रवींद्र कुमार रवि, देशबंधु शाहजाहाँपुरी, साबिर हुसैन, सुरेंद्र श्रीवास्तव, वीणा श्रीवास्तव, शिवचरण चौहान, राजकुमार जैन राजन, मोहम्मद फहीम और अरशद खान आदि रचनाकारों की एक सशक्त टीम हिंदी बाल साहित्य की बेहतर की दिशा में सक्रिय है। इन सभी रचनाकारों के अथक प्रयास ने आज हिंदी बाल साहित्य को उस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है कि वह अन्य किसी भी भाषा के बाल साहित्य से होड़ लेने में पूरी तरह समर्थ है।

पिछले लगभग तीन दशक का समय विज्ञान, तकनीक, संचार और सूचना के क्षेत्र में क्रांति का समय रहा है। विज्ञान और टेकनॉलाजी न सिर्फ हमारे सामाजिक और पारिवारिक बल्कि

वैयक्तिक जीवन में भी काफ़ी गहरा हस्तक्षेप किया है। आज का बच्चा होश संभालते ही टी.वी., कंप्यूटर, एसी, फ्रिज़ और मोबाइल जैसे उपकरणों से साक्षात्कार करता है। अतः उसे परी, अप्सरा, भूत, प्रेत और दैवीय चमत्कार सरीखी काल्पनिक बातों से नहीं बहलाया जा सकता। हिंदी के बाल साहित्यकार इस तथ्य को बखूबी समझते हैं और यही कारण है कि हिंदी में आज वैज्ञानिक दृष्टी संपन्न साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। शुकदेव प्रसाद, जयंत विष्णु नार्लीकर, विजयकुमार उपाध्याय, गुणाकर मुले तथा लल्लन कुमार प्रसाद जैसे रचनाकारों ने विविध विधाओं में विपुल मात्रा में मौलिक रोचक तथा उपयोगी विज्ञान बाल साहित्य की रचना की है। इनके अतिरिक्त संजीव जायसवाल, संजय अरविंद मिश्र तथा जाकिर अली रजनीश ने भी वैज्ञानिक विषयों को लेकर कविताओं, कहानियों, उपन्यासों तथा वैज्ञानिक लेखों आदि की रचना की है।

इंटरनेट पर बाल साहित्य की पहुँच तेजी से बढ़ रही है। गूगल द्वारा फ्री स्पेस उपलब्ध कराने के बाद से इस दिशा में एक क्रांति सी हुई है। 'बालमन' सबसे पहला ब्लॉग है, जिसने श्रेष्ठ बाल साहित्य को इंटरनेट पर जगह दी। मजदूर बच्चों के द्वारा चलाए जा रहे 'बाल सजग', 'नानी की चिट्ठियाँ' एवं 'फुलबगिया' ब्लॉग महत्वपूर्ण हैं। जरूरी हैं कि इन ब्लॉग पत्रिकाओं तक बच्चों को पहुँचाया जाए और बच्चों को निरापद ढंग से इंटरनेट पर काम करने के लायक बनाना आज की आवश्यकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी का बाल साहित्य अपना विकास करता जा रहा है और उसकी अनेक संभावनाएँ भी बन रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. बाल साहित्य - समीक्षा के प्रतिमान और इतिहास लेखन - डॉक्टर पांडेय
2. बाल साहित्य का स्वरूप और रचना संसार - डॉ शकुंतला कालरा